फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस:
इन्नोवेशन एण्ड इनसाइट्स

नॉर्मस, नॉलेज एण्ड यूसेज (मानदंड, जानकारी और उपयोग)

प्रकाशन 07 जनवरी 2016

CLTS Knowledge Hub at Institute of Development Studies
www.communityledtotalsanitation.org

सी.एल.टी.एस नॉलेज हब (जानकारी केंद्र) के बारे में

आइ.डी.एस (IDS) अपने आरंभ से ही कम्यूनिटी-लेड टोटल सैनिटेशन (सी. एल.टी.एस) (CLTS) (समुदाय संचालित संपूर्ण स्वच्छता) के पक्ष में काम कर रहा है। सी.एल.टी.एस (CLTS) अब एक अंतर्राष्ट्रीय अभियान का रूप धारण कर चुका है जिसके लिए आइ.डी.एस एक मान्यता प्राप्त जानकारी केंद्र है।

यह जानकारी केंद्र, सी.एल.टी.एस (CLTS) की गतिविधियों की जमीनी वास्तविकताओं को समझने और अच्छे आचरण, विचारों और नवोन्मेषों के बारे में सीखने, उन्हें साझा करने और उन्हें आगे बढ़ावा देने के प्रति प्रतिबद्ध है जिसके परिणामस्वरूप निरंतरता और पैमाना दोनों उत्पन्न होते हैं। हमारा उद्देश्य यह है कि हम सी.एल.टी.एस (CLTS) समुदाय को सुसंबद्ध और अवगत रखें तथा सभी प्रासंगिक विषयों के बारे में उन्हें सूचित करें और साथ ही मीमांसा, निरंतर सीखने और जानकारी के आदान प्रदान के लिए भी एक स्थान प्रदान करें। हम पेशेवरों, नीति निर्माताओं, अनुसंधानकर्ताओं और विकास, स्वच्छता और संबंधित समुदायों में काम करने वाले अन्य व्यक्तियों के साथ मिल कर काम करते हैं।

अंततः इस केंद्र का सर्वोत्तम लक्ष्य यह है कि वह विकासशील दुनिया में उन बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के सम्मान, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए अपना योगदान दे जो वर्तमान में अपर्याप्त या अनुपलब्ध स्वच्छता और खराब साफ सफाई के परिणाम भुगत रहे हैं।

मुख आवरण
पन्ना, मध्य प्रदेश, भारत में एक अप्रयुक्त शौचालय

श्रेय: आंद्रेस हुएसो, वॉटरएड

नॉर्म्स, नॉलेज एण्ड यूसेज
(मानदंड, जानकारी और उपयोग)

रॉबर्ट चेम्बर्स एवं जेमी मायर्स,
इंस्टिट्यूट ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीज़

सही उद्धरण: चेम्बर्स, आर. एवं मायर्स, जे. (2016) 'नॉर्म्स, नॉलेज एण्ड यूसेज', फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस: इनोवेशन एण्ड इनसाइट्स संस्करण 7, ब्राइटन:आइडीएस

2016 में पहली बार प्रकाशित
© इंस्टिट्यूट ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीस 2016

कुछ अधिकार सुरक्षीत – अधिक विवरण के लिए कॉपीराइट लाइसेंस देखें।

आइएसबीएन 978-1-78118-281-9

अधिक जानकारी के लिए कृपया निम्नलिखित पते पर संपर्क करें:

CLTS Knowledge Hub, Institute of Development Studies, University of Sussex, Brighton, BN1 9RE
टेलीफोन: +44 (0)1273 606261
ईमेल: CLTS@ids.ac.uk
वेब: www.communityledtotalsanitation.org

यह सिरीज (शृंखला) Creative Commons Attribution-Non-Commercial-NoDerivs 3.0 Unported License (http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/3.0/) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।
अधिकार: आपको केवल लेखक या लाइसेंसर (लाइसेंसदाता) द्वारा वर्णित पद्धति अनुसार ही इस कृति का उपयोग करना चाहिए।
गैर-वाणिज्यिक: वाणिज्यिक उद्देश्य हेतु आपके द्वारा इस कृति का उपयोग निषिद्ध है।
साधित कृतियां निषिद्ध हैं: आप इस कृति को ना तो बदल सकते हैं, ना स्थानांतरित कर सकते हैं और ना ही इसे बढ़ा सकते हैं।

प्रयोक्ताओं को यह अधिकार दिया जाता है कि वे बिना किसी लिखित अनुमति के इस कृति की प्रतिलिपि बना सकते हैं, इसे वितरित, प्रदर्शित कर सकते हैं, इसका अनुवाद कर सकते हैं या इस कृति को कार्यान्वित कर सकते हैं। किसी भी पुनः उपयोग या वितरण के लिए आपको दूसरों को इस कृति के लाइसेंस की शर्तों का स्पष्ट रूप से उल्लेख करना होगा। अगर आप इस कृति का उपयोग करते हैं तो हम यह अनुरोध करते हैं कि आप सी.एल.टी.एस (CLTS) की वेबसाइट का संदर्भ दें और निम्नलिखित पते पर हमें उस कृति की प्रति या उसका लिंक भेजें:
CLTS Knowledge Hub, Institute of Development Studies, University of Sussex, Brighton, BN1 9RE, UK (CLTS@ids.ac.uk).

इस संस्करण की सारी तस्वीरों को लेने और उनका उपयोग करने की अनुमति दी गई है।

This document has been financed by the Swedish International Development Cooperation Agency, Sida. Sida does not necessarily share the views expressed in this material. Responsibility for its contents rests entirely with the author.

आभार

मसौदों पर समकक्ष व्यक्तियों द्वारा प्रदान की गई तर्कसाध्य समीक्षाओं के लिए हम संचिता घोष, पेट्रा बॉनगार्ट्ज और संगीता व्यास और संपादन कार्य एवं इस प्रकाशन की अभिकल्पना के लिए नेओमी वरनॉन के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं। हम क्लेयर फरलॉन्ग के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करना चाहेंगे जो पृष्ठ 17 पर उल्लिखित 'टाइगर वर्म्स: अ विन विन सॉल्यूशन' की लेखिका हैं।

नॉर्म्स, नॉलेज एण्ड यूसेज (मानदंड, जानकारी और उपयोग)[1]

परिचय

शौचालयों का निरंतर उपयोग, विशेष रूप से भारत में एक प्रमुख और बढ़ती हुई समस्या के रूप में सामने आया है। जिन परिवारों में शौचालय है वहाँ के कुछ लोग उसका बिल्कुल भी उपयोग नहीं करते हैं और बाकी लोग कभी-कभी ही उसका उपयोग करते हैं। यह शौचालय का निर्माण होते ही आरंभ हो सकता है या यह समय के साथ-साथ बढ़ सकता है जिसके साथ दूसरी और तीसरी पीढ़ी की समस्याएं भी शामिल हो सकती हैं। यह ओपन डेफिकेशन फ्री (ओडीएफ – खुले में शौच से मुक्त) स्थिति को उत्पन्न होने से रोकता है या उसे समाप्त कर देता है। शौचालय की गुणवत्ता, उसका रखरखाव और उस तक पहुँच भी कारक हो सकते हैं लेकिन हाल ही में प्राप्त प्रमाण यह संकेत करते हैं कि मानसिकताएं, सामाजिक मानदंड एवं सांस्कृतिक वरीयताएं भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं।

भारत को पूर्ण अनुपयोग की अतिरिक्त समस्या का भी सामना करना पड़ता है। अधिकांश अफ्रीकी देशों, नेपाल, इंडोनेशिया और दूसरों से अलग भारत में सार्वभौमिक पारिवारिक हार्डवेयर सब्सिडी ने सी.एल.टी.एस (CLTS) की संपूर्ण पहुँच को कुछ विशिष्ट स्थानों में ही सीमित कर दिया है। सब्सिडी, भ्रष्टाचार, लोगों के लिए बनाए और उन्हें प्रदान किए जाने वाले साधारण शौचालयों का डिजाइन और अपूर्ण और दोषपूर्ण निर्माण कार्य के कारण अनेक निर्मित शौचालयों का कभी भी उपयोग ही नहीं किया गया है। भारत के इकोनॉमिक टाइम्स समाचार पत्र ने 23 नवंबर 2015 को यह सूचित किया कि नैशनल सैम्पल सर्वे ऑफिस के अनुसार स्वच्छ भारत (क्लीन इंडिया) मिशन के पहले वर्ष (2014-5) के दौरान ग्रामीण भारत में निर्मित 95 लाख शौचालयों में से केवल 46 फ़ीसदी का ही उपयोग किया जा रहा है (शर्मा 2015)। और इनमें से कई का केवल आंशिक रूप से ही उपयोग किया गया है।

फ्रनटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस के इस प्रकाशन में हम शैक्षणिक और अव्यावसायिक साहित्य के आधार पर आंशिक उपयोग की बढ़ती हुई समस्या पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। ओडीएफ (खुले में शौच से मुक्त) परिस्थितियां हासिल करने के कुछ वर्ष बाद कुछ समुदायों में आंशिक उपयोग उभर रहा है। हम पूछते हैं कि यह समस्या कितने बड़े पैमाने पर फैली हुई है और यह कितना गंभीर मुद्दा है, यह क्यों उत्पन्न होता है, इसके बारे में क्या किया जा सकता है और किन बातों को जानने की जरूरत है?[1] हम अफ्रीका और एशिया से मिले प्रमाण का उपयोग करते हैं और इसमें से अधिकांश प्रमाण भारत से हैं जहाँ इस विषय पर अधिक प्रासंगिक अनुसंधानों को संचालित किया गया है और जिसके अनुसार आंशिक उपयोग अनियंत्रित है। हमारा यह मानना है कि भारत और स्वच्छ भारत मिशन के लिए इसके महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं और साथ ही दुनिया में यह उन अन्य देशों के लिए भी महत्वपूर्ण है जो इस समस्या का सामना कर रहे हैं।

1 फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस का यह प्रकाशन 'Sustainability and CLTS: Taking Stock' का संपूरक है और इसमे कुछ अतिरिक्त तथ्यों का उल्लेख भी किया गया है।

पैमाना और गंभीरता

केवल शौचालयों (टॉयलेट) की संख्या गिनने के बदले उनके उपयोग की मात्रा का पता लगाना कई गुणा अधिक कठिन और महंगा है। आंशिक उपयोग पर नजर रखना और भी कठिन है और इसके लिए परिवारों के बीच संचालित सर्वेक्षणों (सर्वे) की आवश्यकता है जिनमें एक परिवार के भीतर सभी सदस्यों की शौच और स्वच्छता संबंधी आदतों के बारे में प्रश्न पूछे जाएँ अन्यथा व्यापक स्तर पर निगरानी की जरूरत है।

मध्य प्रदेश में एक अनुपयुक्त शौचालय।
श्रेय: आशीश गुप्ता, आर.आइ.सी.ई।

संचालित सर्वेक्षण की पद्धति और पूछे गए प्रश्नों के प्रकार के अनुसार आंशिक उपयोग से संबंधित आंकड़े काफ़ी अलग-अलग हो सकते हैं (भारत के महत्वपूर्ण विश्लेषण के लिए कॉफी एण्ड स्पीयर्स 2014 देखें) जिसके परिणामस्वरूप परिस्थिति और भी जटिल हो जाती है। रिपोर्टों में शायद ही कभी कार्यप्रणाली का वर्णन किया जाता है और योग्य आंकड़ों में प्रयुक्त शब्द प्रायः अस्पष्ट होते हैं। परिणामस्वरूप, इस मामले के बारे में नीचे प्रस्तुत किए गए उपलब्ध आंकड़ों को यथार्थ विवरण के बदले केवल संकेतक के रूप में समझा जाना चाहिए।

भारत के बाहर, अनुपयोग और आंशिक उपयोग के सूचित पैमाने और उनकी गंभीरता काफ़ी भिन्न है। बांग्लादेश में, जिन क्षेत्रों में सी.एल.टी.एस का उपयोग किया गया था वहाँ यह दर्ज किया गया कि 11 फ़ीसदी परिवारों ने यह स्वीकार किया कि उनके एक या अधिक सदस्य अब भी खुले में शौच कर रहे हैं (हैनशेट और अन्य 2011)। इथियोपिया में संचालित एक अनुसंधान (एशएबिर और अन्य 2013) में यह पाया गया कि केवल 37 फ़ीसदी परिवार ही निरंतर अपने शौचालयों का उपयोग कर रहे हैं जब कि 54 फ़ीसदी उनका बिल्कुल भी उपयोग नहीं करते थे। इथियोपिया में संचालित एक और अध्ययन (यिमाम और अन्य 2015) ने यह सूचित किया कि अपने आप उपयोग के बारे में सूचित करने वाले 87 फ़ीसदी लोगों में से केवल 61 फ़ीसदी लोग ही शौचालयों का ठीक से उपयोग कर रहे थे, 24 फ़ीसदी शौचालयों में उपयोग के कोई चिह्न ही नहीं थे और 14 फ़ीसदी के अहातों में मल पाया गया था।

बिहार, हरयाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में रिसर्च इंस्टिट्युट फॉर कमपैशेनिट इकनोमिक्स (आरआइसीई) द्वारा संचालित अत्यंत पेशेवर और विश्वसनीय सैनिटेशन क्वॉलिटी, यूज, एक्सेस, एण्ड ट्रेंड्स (एसक्यूयूएटी) (SQUAT) सर्वेक्षण ने यह पाया कि सही तरह से काम करने वाले शौचालय की सुविधा प्राप्त 48 फ़ीसदी परिवारों में परिवार का कम से कम एक सदस्य अब भी खुले में शौच करता है (कॉफी और अन्य 2014), जब कि गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और नेपाल के दक्षिणी मैदान में स्थित पारसा में बाद में संचालित एक अध्ययन ने इसी मुद्दे के लिए 56 फ़ीसदी परिवारों की संख्या का पता लगाया (संबंधित व्यक्ति. संगीता व्यास)। मध्य प्रदेश में एक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण (पाटिल और अन्य)

में जहाँ सी.एल.टी.एस जैसी ही कार्यप्रणाली का उपयोग किया जा रहा था और साथ ही ऑफ्सेट गड्ढे (पिट) सहित शौचालयों का निर्माण करने के लिए परिवारों को हार्डवेयर सब्सिडी दी जा रही थी वहाँ यह पाया गया कि इस प्रणाली के समूह में 41 फ़ीसदी पुरुष और 38 फ़ीसदी महिलाएं स्वच्छता के साधन उपलब्ध होने के बावजूद भी हर दिन खुले में शौच (ओडी) करते/करती थे/थीं।

राजस्थान में संचालित एस.क्यू.यू.ए.टी सर्वेक्षण के तहत स्वच्छता संबंधी अभ्यासों के बारे में महिलाओं का साक्षात्कार। *श्रेय: आशीश गुप्ता, आर.आइ.सी.ई।*

ओडिशा में चार प्रासंगिक अध्ययन संचालित किए गए हैं। जो लोग पूरी तरह से काम करने वाले शौचालय की सुविधा प्राप्त होने के बावजूद खुले में शौच कर रहे थे उनकी संख्या 27 फ़ीसदी (जेनकिंस और अन्य 2014), और 24 फ़ीसदी (पिछले 7 दिनों में खुले में शौच करना) थी (ड्रेइबेलबिस और अन्य 2015)। एक अध्ययन ने यह पाया कि शौचालय की सुविधा प्राप्त 37 फ़ीसदी लोगों ने कभी उनका उपयोग ही नहीं किया था (बरनार्ड और अन्य 2013), जब कि एक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण ने यह पाया कि एक नियंत्रित समूह के 37 फ़ीसदी शौचालयों का उपयोग नहीं किया जा रहा था (क्लासेन और अन्य 2014)।

फिर, आंशिक उपयोग और साथ में खुले में शौच करने (ओडी) की आदत जारी रखना या वापस खुले में शौच करना (ओडी) आरंभ करना, विशेष रूप से भारत में एक गंभीर समस्या है । नए निर्मित शौचालयों का शुरुआत से ही आंशिक उपयोग किया जा सकता है या यह समय के साथ साथ विकसित हो सकता है। सी.एल.टी.एस के संचालन के पश्चात किसी समुदाय का खुले में शौच से मुक्त होने के कुछ वर्षों बाद, गड्ढों के भर जाने और आंशिक उपयोग या अनुपयोग को एक बढ़ती हुई समस्या के रूप में प्रत्याशित किया जा सकता है (मायर्स, आगामी), जिसका यह अर्थ है कि संपूर्ण शौचालयों का कवरेज खुले में शौच से मुक्ति की वास्तविक परिस्थितियों की और भी गलत छवि प्रस्तुत करेगा।

अनुपयोग या आंशिक उपयोग से संबंधित कारक

हमने नौ कारकों के समूह पाए हैं जो अनुपयोग या आंशिक उपयोग से संबंधित हैं:

- सामाजिक मानदंड।
- प्रतिबंध, मान्यताएं और पाबंदियाँ।
- वरीयताएं और सुविधा।
- आयु और अक्षमता।
- लिंग और लिंग संबंधी पहलू।
- उपयोग पर दबाव।

- भरे हुए गड्ढे और ग़ड्ढों के भर जाने का भय।
- गंदगी, दुर्गंध, घृणा, भय और सफ़ाई।
- डिजाइन, निर्माण और स्वामित्व।

यह कारक (फ़ैक्टर) शायद अपने आप काम कर सकते हैं लेकिन इस बात की अधिक संभावना है कि इनमें से अनेक कारकों के मेल से आंशिक उपयोग उत्पन्न होता है।

सामाजिक मानदंड

सामाजिक तौर पर स्वीकार्य या सम्मत मान्यताओं, विश्वासों, मानसिकताओं और व्यवहारों को एकत्रित रूप से सामाजिक मानदंड कहते हैं। सामाजिक मानदंड इस बात से जुड़े हुए हैं कि लोगों के मतानुसार दूसरे उनसे किस प्रकार का बर्ताव करने की अपेक्षा करते हैं और वे स्वयं दूसरों से किस प्रकार के बर्ताव की अपेक्षा करते हैं। केवल मात्र सामाजिक मानदंडों को बदल कर ही बड़े पैमाने पर फैले खुले में शौच करने की आदत को पराजित किया जा सकता है: हर किसी के मन में एक शौचालय की सुविधा प्राप्त करने की चाह होनी चाहिए, उनके भीतर हर समय उसका उपयोग करने की इच्छा होनी चाहिए, उन्हें हर समय उसका उपयोग करना चाहिए और उन्हें दूसरों से यह अपेक्षा करनी चाहिए कि उनके मन में भी एक समान इच्छा उत्पन्न हो और वे भी ऐसा ही करना चाहें।

यह सफल सी.एल.टी.एस संचालन द्वारा उत्प्रेरित सामूहिक व्यवहार में बदलाव का एक अंश है। इसके द्वारा पुरानी आदतों को पराजित करना होगा और साथ ही भारत में इसे शुद्धता और प्रदूषण से संबंधित अत्यंत गहन विश्वासों को पराजित करना होगा। इनके कारण लोगों को ऐसा लगता है कि घरों के भीतर या उसके आस - पास शौचालय होने से गंदगी (अपवित्रता) बढ़ती है विशेष रूप से उन लोगों के बीच जिनके पास छोटे गड्ढे हैं तब भी जब वे निर्मित गड्ढे आमाप के लिए निर्धारित अंतर्राष्ट्रीय नियमों को पूरा करते हों (रूट्रे और अन्य 2015; कॉफी और अन्य 2015)। उत्तरी भारत में संचालित एक अध्ययन में यह पाया गया कि बहुत ही कम ऐसा देखा जाता है कि खुले में शौच करना (ओडी) सामाजिक तौर पर अमान्य है (कॉफी और अन्य 2015)। शरीर की शुद्धता और अपवित्रता से जुड़े मानदंड और गोपनीयता से संबंधित धारणाएं निवास स्थान से दूर खुले में शौच (ओडी) करने के आचरण का समर्थन करती हैं, तब भी जब एक शौचालय उपलब्ध हो। बहुत से लोग खुले में शौच करने को एक पुष्टिकर क्रिया मानते हैं जो शुद्धता को बढ़ावा देती है और स्वास्थ्य के लिए अच्छी है (कॉफी और अन्य 2015)। विपरीततः निवास स्थान के पास शौचालयों को गंदा और अपवित्र माना जाता है। सामूहिक रूप से बर्ताव में परिवर्तन लाने से ही इस सोच को संपूर्ण रूप से बदला जा सकता है।

सामूहिक रूप से मानदंडों को बदलने के बावजूद भी विचलनों को स्वीकारा जा सकता है – उदाहरणार्थ, बच्चों, वृद्ध लोगों या अक्षम लोगों के लिए। कुछ परिस्थितियों में खुले में शौच करने (ओडी) को अधिक स्वीकार्य माना जा सकता है, उदाहरणार्थ, यात्रा करने के समय या जब घर से दूर हों। बांग्लादेश में, जहाँ लोगों ने खुले में शौच करना बंद कर दिया है वहाँ अगर वृद्ध लोग अब भी आदतन ऐसा करना जारी रखें तो उनकी कड़ी तौर पर निंदा नहीं की जाती है (हैनशेट और अन्य 2011)। भारत और अन्य जगहों में, यह मानदंड और सहिष्णुताएं पूर्ण रूप से खुले में शौच करने की आदत से मुक्त परिस्थितियों को प्राप्त करने के सामने बड़ी चुनौतियां पेश कर सकती हैं।

प्रतिबंध, मान्यताएं और पाबंदियां

करीबी रिश्तेदारों के साथ एक ही शौचालय का उपयोग करना, पुरुष प्रधान समाजों में विशेष रूप से पिताओं (ससुर) और बहुओं के बीच और महिला प्रधान समाजों में माँताओं और दामादों के बीच शौचालय के उपयोग को प्रभावित कर सकता है (थिस और अन्य 2015)। प्रतिबंधों, मान्यताओं और पाबंदियों के अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- नेपाल के दूर पश्चिमी इलाके में ऐसे मामलों को सूचित किया गया है जहाँ मासिक के दौरान महिलाओं को शौचालय का उपयोग करने से वर्जित किया जाता है और उन्हें दोबारा खुले में शौच करना (ओडी) आरंभ करना पड़ा। किसी एक समय 13 से 50 वर्षीय एक तिहाई महिलाओं के मासिक चल सकते हैं और वे बाहर शौच कर सकती हैं (पैमेला व्हाइट की टिप्पणी)।
- बांग्लादेश में, जब एक व्यक्ति जिनके बेटे ने चार वर्ष पहले शौचालय का निर्माण किया था, उनसे पूछा गया कि 'आप शौच कहाँ करते हैं?' तो उन्होंने उत्तर दिया कि वे बहुत ही कम शौचालय का उपयोग करते थे ताकि वे अपनी बहुओं को या अपने आप को शर्मिंदा ना करें क्योंकि उनकी बहुओं को अपने मासिक के रक्त को धोना पड़ता था। बल्कि, उन्हें झाड़ियों में शौच करना अधिक सहज लगता था (हैनशेट और अन्य 2011:53)।
- नाइजीरिया के इडोमा समुदायों में किसी बिल्डिंग या निर्मित अधिरचना में शौच करना निषिद्ध है। पतियों ने भी उनकी पत्नियों और बेटियों के साथ एक ही शौचालय का उपयोग करने से मना कर दिया है (वॉटरएड 2009)।
- पूर्वी जामबिया में, पारंपरिक वर्जनों ने परिवार के प्रधान पुरुषों के लिए उनकी सांसों, बहुओं/दामादों, वयस्क बच्चों, बड़ी बेटियों और छोटे बच्चों के साथ शौचालय साझा करने का काम कठिन बना दिया है क्योंकि शायद देखे जाने का उच्च जोखिम हो या अगर छोटे बच्चे सीधे अपने पिता के बाद शौचालय का उपयोग कर लें (थिस और अन्य 2015)।
- इथियोपिया में एक अध्ययन ने यह पाया कि पुरुषों और महिलाओं का एक ही शौचालय साझा करना मना है और मल का दिखाई देना अस्वीकार्य है। ऐसा दर्ज किया गया है कि इस परिस्थिति से बचने के लिए पुरुषों ने बाहर खुले में शौच करना जारी रखा है (एशेबिर और अन्य 2013)।
- नाइजीरिया में यह एक आम मान्यता है कि गड्ढे से आने वाली गरम हवा महिलाओं के लिए बीमारियों की चपेट में आने की संभावना अधिक बढ़ा देती है। एक आधारभूत अध्ययन में इसे एक संभाव्य तर्क के रूप में प्रस्तुत किया गया था कि क्यों पुरुषों की तुलना में महिलाओं के बीच शौचालयों का उपयोग करने की कम संभावना है (अब्रामॉवस्की और अन्य 2015)।

सी.एल.टी.एस के तहत ऐसी समस्याओं को पुनः समुदाय के बीच रखा जाता है ताकि वे स्वयं उनका समाधान कर सकें या तो अतिरिक्त शौचालयों का निर्माण करके, उन पर लगे पाबंदियों को अमान्य ठहरा कर या किन्हीं भी अन्य तरीकों से। उदाहरणार्थ, यह सूचित किया गया कि एक सी.एल.टी.एस सहजकर्ता ने पूछा कि क्या मल का शौचालय में मिल कर नष्ट हो जाना बेहतर हैं या किसी व्यक्ति के पेट में। फिर भी, अगर साझा करने के विषय पर पाबंदियां विद्यमान हों तो कुछ परिवारों में एक से अधिक शौचालयों की जरूरत हो सकती है।

व्यवहार में परिवर्तन लाने के विषय पर संचार व्यवस्था, प्रतिक्रिया के बाद की स्थिति और खुले में शौच से मुक्त होने की कार्रवाइयों और खुले में शौच से मुक्त स्थिति के स्त्यापन और प्रमाणीकरण के लिए ऐसे प्रतिबंधों, मान्यताओं और पाबंदियों के बारे में ज्ञात और जागरुक होना सहायक सिद्ध हो सकता है। पहले ही, मासिक धर्म के बारे में जानकारी और उसके बारे में लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाने के बारे में और सी.एल.टी.एस कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिबंधों को चुनौति देने के तरीकों की चर्चा की गई है (रूस और अन्य 2015)।

वरीयताएं और सुविधा

भारत में, खुले में शौच करना (ओडी) प्रायः वरीय है और इसे अधिक स्वस्थ विकल्प भी माना जाता है। उत्तरी भारत में संचालित एस.क्यू.यू.ए.टी (SQUAT) सर्वेक्षण ने यह पाया है कि जिनके पास शौचालय था वे भी खुले में शौच करना जारी रख रहे थे, 74 फ़ीसदी को यह अधिक आनंददायक, आरामदायक या सहज लगता है (कॉफी और अन्य 2014)। प्रायः ऐसे स्थान पाए जा सकते हैं – एक धारा, नदी, झील, तालाब, झरना, सिंचाई चैनल या भूजल पंप – जहाँ गुदा साफ करने के लिए पानी उपलब्ध हो। गुदा साफ करने के लिए पानी की कमी और शौच के पश्चात शौचालय के पास नहाने की रीत को खुले में शौच करने (ओडी) का एक कारण बताया गया है (रूट्रे और अन्य 2015)।

जो अल्प सक्षम हैं: गरीबी, आयु और अक्षमता

जो लोग सहायता के बिना शौचालय का निर्माण करने और उसका रखरखाव करने के लिए अल्प सक्षम हैं वे खुले में शौच करना (ओडी) जारी रखते हैं या कुछ समय के लिए बंद करने के बाद दोबारा वही आदत शुरू कर देते हैं (कैविल और अन्य, आगामी)। बहुत सारी परिस्थितियों में छोटे बच्चे के मल को प्रायः हानिरहित माना जाता है और उसका स्वच्छ रूप से निपटान नहीं किया जाता है। बच्चे के मल का सुरक्षित रूप से निपटान एक बहुत बड़ा विषय है और यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर अब तक अनुसंधान, नीति और कार्यक्रम संबंधी हस्तक्षेपों में कोई महत्व ही नहीं दिया जा रहा था (डब्लू.एस.पी 2015)।

अफ़्रीका, एशिया, पैसिफिक और कैरेबियन में 26 स्थानों में संचालित मामलों के अध्ययनों से यह पाया गया है कि सभी देशों में कुछ ऐसे परिवारों के बीच बच्चों के मल के असुरक्षित निपटान के किस्सों को सूचित किया गया था जिनके पास उन्नत स्वच्छता के साधन हैं (डब्लू.एस.पी 2015)। वृद्ध लोगों में खुले में शौच करने (ओडी) की अपनी आदत को छोड़ने की अनिच्छा को प्रायः सहन कर लिया जाता है। अगर उनके पक्ष में कहें तो, पहुँच में होने वाली असुविधा के कारण अक्षम लोग शायद शौचालयों का उपयोग ना कर सकें (विलबर एवं जोंस 2014 देखें)। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित कुछ लोगों को मनाना या नियंत्रित करना कठिन हो सकता है और खुले में शौच करने की उनकी जारी आदत (ओडी) को स्वीकार लिया जाता है।

शौच करता हुआ लड़का। श्रेय: *रॉड शॉ, डब्लूईडीसी।*

लिंग संबंधी पहलू

महिलाओं के पास शौचालय का उपयोग ना करने के कई ऐसे कारण हैं जो पुरुषों पर लागू नहीं होते (हाउस एवं कैविल 2015; रूस और अन्य 2015 देखें)। दक्षिण एशिया में शौचालयों का निर्माण उस शारीरिक और मानसिक तनाव को दूर कर देता हैं जो भोर से पहले उठने और उसके कारण नींद न आने, या अंधेरा ना होने तक रोक कर रखने के कारण उत्पन्न होता हैं। एस.क्यू.यू.ए.टी (SQUAT) सर्वेक्षण (कॉफी और अन्य 2014) से यह पता चला है कि जिन परिवारों के पास शौचालय था वहाँ महिलाओं की तुलना में पुरुष उनका कम उपयोग करते थे। बहुत से कारण हेतु महिलाओं की तुलना में अधिक पुरुष खुले में शौच करते हैं, और इन कारणों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- उनके पास अधिक समय है। बहुत सवेरे महिलाएं अधिक व्यस्त होती हैं।
- निवास स्थान में या उसके पास पुरुषों पर घर और बच्चों की देखभाल के कम दायित्व होते हैं।
- दिन के समय पुरुष अधिक दूर तक यात्रा करते हैं।
- महिलाओं की तुलना में पुरुषों का देखा जाना कम शर्मनाक है और वे एक समान रूप से यौन उत्पीड़न या दृश्यरसिकों द्वारा अपमानित होने के प्रति असुरक्षित नहीं हैं।
- पुरुष अपने खुले में शौच करने (ओडी) की आदत को तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं और अपने पक्ष में वे यह तर्क पेश करते हैं कि वे महिलाओं को शौचालय तक अप्रतिबंधित पहुँच प्रदान करके उनके मान सम्मान को बढ़ा रहे हैं और उनका मर्दाना दृष्टिकोण यह बताता है कि शौचालय उनके लिए नहीं बने हैं बल्कि वे महिलाओं, बच्चों, अत्यंत वृद्ध, बीमार या अक्षम लोगों के लिए बने हैं।
- उनके भर जाने की संभावना को विलंबित करने के लिए पुरुष शायद शौचालय का उपयोग न करें।
- इस बात की अधिक संभावना है कि पुरुषों ने शायद सार्वजनिक शौचालयों का उपयोग किया है और उस अभिज्ञता से उनके मन में शौचालयों के प्रति घृणा आ गई है।

हालांकि, दक्षिण एशिया में और ऐसे अन्य समुदायों में जहाँ महिलाओं का आना-जाना प्रतिबंधित हैं वहाँ एक साथ मिल कर खुले में शौच के लिए जाते समय महिलाओं को एक महत्वपूर्ण सामाजिक अवसर लग सकता है जहाँ वे बाहर जा सकती हैं और पुरुषों की अनुपस्थिति में एक साथ मिल सकती हैं और बात कर सकती हैं। हाल ही में ओडिशा में संचालित एक अध्ययन (रूट्रे और अन्य 2015) से यह पता चला है कि शौचालयों के अल्प उपयोग का एक महत्वपूर्ण कारक लोगों का घुलना मिलना भी है। महिलाओं ने बताया कि खुले में शौच करने जाना उन्हें अपने घरों को छोड़ने और घर के काम और दायित्वों से दूर जाने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान करता है। कुछ महिलाओं ने यह भी बताया कि यह एक ऐसा समय है जब वे अपनी पारिवारिक समस्याओं को साझा करके अपने तनाव को कम कर सकती हैं। बहुओं के लिए यह घर से बाहर निकलने का एक मात्र अवसर है।

भारत में, ऐसे अभियानों के प्रति भिन्न मत सामने आए हैं जो पुरुषों से यह अनुरोध करते हैं कि वे अपने परिवार की महिलाओं के मान सम्मान के लिए शौचालयों का निर्माण करें। कुछ लोग यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि वे पर्दा और आवा जाही पर प्रतिबंधों को और सशक्त बना देते हैं (श्रीवास्तव और गुप्ता 2015; दोरोन और राजा 2015) और जिन अभियानों में शौचालयों और महिलाओं को एक साथ जोड़ा जाता है उनमें पुरुषों के बीच उनके उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों के असफल होने का अधिक जोखिम होता है (श्रीवास्त और गुप्ता 2015)। दूसरे लोग इस पर विवाद करते हैं, और अपने पक्ष में यह तर्क पेश करते हैं कि वास्तव में इस से महिलाओं की सहभागिता बढ़ जाती है, एक अत्यंत ही पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को स्वच्छता तक

पहुँच मिलती है और इस बात पर विशेष जोर डाला गया कि खुले में शौच से मुक्त होने के लिए संचालित विस्तृत अभियान में मान-सम्मान दूसरे कारणों की तरह केवल एक घटक था (डोगरा 2015)।
अन्य कारक, महिलाओं और पुरुषों दोनों को एक समान रूप से प्रभावित कर सकते हैं। भय शायद एक कारक हो: पुरुषों और महिलाओं को शायद शौचालय में जाते समय दूसरों के द्वारा देखे जाने का भय हो या पादते समय दूसरों के द्वारा सुने जाने का भय हो (विशेष रूप से जब शौचालय घर के भीतर हो), या शौचालय को गंदा छोड़ने का भय हो (थिस और अन्य 2015)।

उपयोग पर दबाव

हर परिवार के पास अपना शौचालय होने के बदले अगर कोई सहभाजित शौचालय हो तो भीड़ जमा होने और लाइन लगने की अधिक अपेक्षा की जा सकती है। बड़े परिवारों में शायद एक शौचलाय सभी सदस्यों के लिए पर्याप्त ना हो। बिहार में संचालित एक अध्ययन से यह पता चला है कि 19 फ़ीसदी परिवारों में दस या उससे अधिक लोग एक ही शौचालय का उपयोग कर रहे थे (वॉटर, सैनिटेशन एण्ड हाइजीन इंस्टीट्यूट 2015)। लाइन में लगने से बचने के लिए या सुबह के दौरान शौचालय के उपयोग पर दबाव से बचने के लिए पुरुष शायद खुले में शौच करने का चयन करें, उदाहरण स्वरूप, जब बच्चे स्कूल के लिए तैयार हो रहे हों। खुले में शौच की आदत से मुक्त एक भारतीय गांव में एक पुरुष ने कहा कि इसी कारणवश वह आदतन, बिल्ली जैसी पद्धति (एक गड्ढा बना कर अपने मल को उसमें दबा देना) का उपयोग करके खुले में शौच करते हैं। बाहर खुले में शौच करना शायद शौच के लिए अधिक समय भी प्रदान कर सकता है: महिलाओं और बच्चों की तुलना में शायद पुरुष अधिक लंबा समय लेना चाहें या शायद उन्हें अधिक लंबे समय की आवश्यकता हो और वे शायद लंबा समय लेने की शर्मिंदगी से बचना चाहें।

भरे हुए गड्ढे और गड्ढों के भर जाने का भय

बहुत से देशों में सी.एल.टी.एस के बड़े पैमाने पर फैलाव के बाद, लगभग पूर्ण या पूर्ण भरे हुए गड्ढों की संख्या बढ़ जाएगी। जब गड्ढे भर रहे हों या भर गए हों तो चार विकल्प हैं:

- एक नया गड्ढा खोदना।
- गड्ढे को खाली करना।
- कम उपयोग करना।
- उसके उपयोग को छोड़ देना और संपूर्ण रूप से खुले में शौच करना दोबारा आरंभ कर देना।

जहाँ जगह कम हो या जहाँ मिट्टी का प्रकार या सतह का स्वरूप उसके निर्माण को कठिन या महंगा बना दे वहाँ एक नए गड्ढे को खोदना समस्याजनक हो सकता है। जाम्बिया में, जहाँ गड्ढे साधारणतः भर जाने पर छोड़ दिए जाते हैं और एक नए शौचालय का निर्माण किया जाता है वहाँ छोटे अहातों में जगह कम पड़ने लगी है (एस.एन.वी जाम्बिया 2014)।

गड्ढों के भर जाने का भय शायद लोगों को शौचालय का उपयोग करने से रोके। उसे खाली करने का खर्च भी एक कारक है: बांग्लादेश में शौचालय के उपयोग को निरंतर बनाए रखने और खुले में शौच से मुक्त अवस्था को बरकरार रखने में गड्ढों को खाली करने की सेवाओं की उप्लब्धता और उनके खर्च को वहन करने का अनुमानित सामर्थ्य दोनों ही मुख्य मुद्दे हैं (हैनशेट और अन्य 2011); ग्रामीण लाओस में जो परिवार खाली करने के औसत खर्च अमरीकी $50 को वहन नहीं कर सकते थे उन्होंने दोबारा खुले में शौच करना आरंभ कर दिया (ओपेल और चिउआसॉन्गखम 2015); और कम्बोडिया में उन परिवारों में फिर से खुले में शौच करने के वर्द्धित जोखिम को दर्ज किया गया जो खाली करने की सेवाओं के खर्च को वहन नहीं कर सकते थे (वुड 2011)।भारत में एक मुख्य कारक यह है कि लोग गंदगी और दूषण और खाली करने के अप्रिय कार्य को टालना चाहते है।

भरा हुआ शौचालय, सईदपुर गांव, बांग्लादेश। *श्रेय: सुजैन हैनशेट।*

ओडिशा में रूट्रे और अन्य (2015) ने यह पाया कि लोगों में यह भय था कि अगर तीन रिंग वाले गड्ढों का हर समय उपयोग किया गया तो वे जल्द ही भर जाएंगे। ग्रामीण उत्तरी भारत में लोग गहरे और बड़े गड्ढे बनाना चाहते हैं, विशिष्ट रूप से सेप्टिक टैंक की भांति जो आजीवन चलेंगे (शाह और अन्य 2013; कॉफे और अन्य, 2015)। यहाँ जाति की भी एक भूमिका है। यह माना जाता है कि मल से जुड़े काम करना भंगियों (सफाईकर्मियों) (टूटी पहचान की भांति) का काम है, जो वह जाति है जिस पर मल ढोने की जिम्मेदारी है। इस बात के गैरकानूनी होने के बावजूद भी अभी तक यहाँ पर यह रीति चालू है। शौचालय को खाली करने के लिए निम्न स्तरीय जातियों की उपस्थिति को भी गंदा माना जाता है और वे स्वयं उन्हें देखे जाने के ढंग और उनसे किए गए व्यवहार से अप्रसन्न हैं। दूसरी जातियां शायद इस बात से भयभीत हैं कि उनके गड्ढों को खाली करने के लिए इन्हें मनाने का खर्च बहुत अधिक होगा (गुप्ता और अन्य, आगामी)।

गड्ढों का भर जाना या उनके भरने की गति को धीमा करने या उसे थोड़े समय के लिए टालने की चाह लोगों को शौचालयों का उपयोग करने या उनका पूर्ण रूप से उपयोग करने से रोक सकता है। फिर वे अधिक से अधिक उसे आपात अवस्थाओं के लिए ही उपयोग करने के लिए रख देते हैं जैसे कि बीमारी, रात के समय, भारी वर्षा और उनके लिए जो वृद्ध, अक्षम, बच्चे और अतिथि हैं। यह अपेक्षा की जा सकती है कि समय के साथ साथ यह मुद्दा और भी महत्वपूर्ण बन जाएगा। सी.एल.टी.एस और साधारणतः ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रमों के लिए निरंतरता को बरकरार रखने हेतु गड्ढों का भरना, उनको खाली करना और उनका आमाप एक ऐसा विषय है जिसका महत्व बढ़ता जा रहा है।

गंदगी, दुर्गंध, घृणा, भय और सफाई

यह तर्क भी प्रस्तुत किया गया है कि दुर्गंध भी शौचालयों को अपनाने से रोकती हैं और इस बाधा को प्रायः नजरअंदाज किया जाता है (रेनलैनडर और अन्य 2013)। उत्तर पश्चिमी इथियोपीया में, यह देखा गया है कि जिन परिवारों में स्वच्छ शौचालय हैं उनके बीच उन शौचालयों का उपयोग होने की चार गुणा अधिक संभावना है (यिमाम और अन्य 2014)।

गंदगी और दुर्गंध ऐसी दो चीजें हैं जो स्कूल और बाजार के शौचालयों का उपयोग करने से लोगों को रोकती है।

मथारे, नैरोबी, केन्या में एक गंदा शौचालय जहाँ शहरी सी.एल.टी.एस कार्यक्रम को संचालित किया गया है।

श्रेय: जेमी मायर्स

प्राइवेट (निजी) या सहभाजित शौचालयों में मलीय गंदगी और दुर्गंध की हद का तालिका 1 में उल्लेख किया गया है।

तालिका 1: गंदे शौचालयों पर सांख्यिकी

देश	नमूने का आमाप	% दुर्गंधयुक्त	% गंदा	'गंदगी' की परिभाषा	स्त्रोत
बांग्लादेश	1495 उन्नत और सहभाजित	26%'शौचालय में या उसके आस पास तेज दुर्गंध'	उन्नत और सहभाजित शौचालयों का 56%	जमीन पर, पैन में या पानी की सील पर मल दिखाई दे रहा था	हैनशेट और अन्य, 2011
तनजानिया	1000 परिवार	लागू नहीं होता	घरों में स्थित 40% शौचालयों को देखा गया	जमीन पर मल दिखाई दे रहा था	वर्ल्ड बैंक 2009
म्यांमार	3993	लागू नहीं होता	35%	साफ नहीं / थोड़ा बहुत साफ नहीं	यूनिसेफ (UNICEF) म्यांमार 2011
मेघालय, भारत	960	56% का यह मानना था कि दुर्गंध ही शौचालय का उपयोग करने का नुकसान था	लागू नहीं होता	लागू नहीं होता	ओ'कॉनल 2014

बांग्लादेश में, यह पाया गया है कि शौचालय का उपयोग स्वच्छता के साथ संबंधित है, हालांकि यह संबंध बहुत दृढ़ता से स्थापित नहीं हुआ है (हैनशेट और अन्य 2011)। आम तौर पर ऐसी बहुत सी कहानियाँ सुनी जा सकती हैं जो बताती हैं कि गंदे और दुर्गंधयुक्त स्कूल के शौचालय बच्चों को उनका उपयोग करने से रोकती हैं जो फिर खुले में शौच करते हैं। सकारात्मक पक्ष में, यह देखा गया है कि सी.एल.टी.एस के परिणामस्वरूप शौचालय अधिक स्वच्छ बने हैं। माली में संचालित एक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण ने नियंत्रित गांवों के 38 फ़ीसदी की तुलना में सी.एल.टी.एस गांवों के 65 फ़ीसदी शौचालयों को अच्छा बताया है और 20 फ़ीसदी की तुलना में केवल 8 फ़ीसदी शौचालयों को बुरा बताया है (अलजुआ और अन्य 2015)।

दो अध्ययनों ने इस बात की पुष्टि की है कि अधिकांश परिस्थितियों में महिलाएं ही शौचालयों को साफ करती हैं: कंबोडिया के 81 फ़ीसदी परिवारों में पत्नी ही शौचालय को साफ करने के लिए जिम्मेदार थी (ग्रामीण विकास मंत्रालय), जब कि बांग्लादेश में यह संख्या 94 फ़ीसदी थी। बांग्लादेश में यह पाया गया कि शौचालय की स्वच्छता का स्तर महत्वपूर्ण रूप से सफाई के लिए पानी के स्त्रोत की दूरी से संबंधित था (हैनशेट और अन्य 2011)।

डिजाइन, निर्माण और स्वामित्व

शौचालय की संरचना और उसका डिजाइन कई तरीकों से उपयोग को प्रभावित करता है: निर्माण कार्य जो कभी पूरा ही नहीं हुआ, छोटा ऊपरी ढाँचा, अंधेरा, सार्वजनिक स्थान में अवस्थिति, बारिश से सुरक्षा के लिए छत आदि जैसे कई कारणों का निवारक के रूप में उल्लेख किया गया है। नाइजीरिया में संचालित एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि शौचालय का प्रकार भी उपयोग की दर को प्रभावित करता है, और साथ ही यह भी बताया कि सेप्टिक टैंकों का उपयोग किए जाने की सर्वाधिक संभावना है और पत्थर की पटिया (स्लैब) के बिना गड्ढे वाले शौचालयों का उपयोग होने की संभावना सबसे कम है (अब्राम ऑवस्की और अन्य 2015)। तंजानिया में यह पाया गया कि एक अपरिष्कृत शौचालय (90 फ़ीसदी) की तुलना में इस बात की अधिक संभावना है कि परिवार के सभी सदस्यों द्वारा एक इम्प्रूव्ड वेंटिलेटिड लैटरीन (परिष्कृत हवादार शौचालय) (वीआइपी) (98 फ़ीसदी) का उपयोग किया जाएगा (केमा और अन्य 2012)। एक के बाद एक अध्ययन (बरनार्ड और अन्य 2013; रूट्रे और अन्य 2015) में यह पाया है कि शौचालय द्वारा गोपनीयता ना प्रदान किया जाना एक ऐसा कारक है जिसके कारण लोग फिर से बाहर खुले में शौच करना शुरू कर देते हैं; पूर्वी जाम्बिया में कुछ शौचालयों की दीवारे बहुत नीचीं थीं, कोई छत नहीं थे या दरवाजों पर कोई ताले नहीं थे (थिस और अन्य 2015)। अनुपयोग के लिए दिए गए अन्य कारणों में शौचालय को साफ करने की सहजता या कठिनाई और शौचालय को साफ करने एवं गुदा को साफ करने लिए पानी की कमी और भारत में शौच के बाद रीति अनुसार नहाने के लिए पानी की कमी शामिल हैं (पाटिल और अन्य 2014; रूट्रे और अन्य 2015)।

फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस प्रकाशन 4 'सस्टेनबिलिटी एण्ड सी.एल.टी.एस: टेकिंग स्टॉक' में शौचालयों की वास्तविक वहनीयता और निरंतरता से जुड़े मुद्दों पर आलोचना की गई है। सी.एल.टी.एस के तहत समुदाय और परिवार प्रायः स्वच्छता की सीढ़ी के सबसे निचले सिरे को चुनते हैं। यह शायद पर्याप्त हों लेकिन गड्ढे की दीवारें ढह सकती हैं, ऊपरी ढाँचा नष्ट हो सकता है और अगर न रोका जाए तो दुर्गंध एक समस्या हो सकती है।

चार अफ़्रीकी देशों में संचालित प्लान इंटरनैशनल ओडीएफ सस्टेनबिलिटी (बाहर खुले में शौच को निरंतर रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय योजना) में बुरी गुणवत्ता, निष्क्रिय शौचालय और उनका रखरखाव ना कर पाना और हुए नुकसान की मरम्मत ना कर पाने को कुछ ऐसे कारणों के रूप में चिह्नित किया गया जिन्हें प्रायः उन लोगों के द्वारा बताया जाता था जिन्होंने दोबारा बाहर खुले में शौच करना शुरू कर दिया था (टिनडेल-बिस्को और अन्य 2013)। दूसरी ओर भूमि के ऊपर और नीचे स्थित स्थायी संरचनाएं और पत्थर की पटिया ऐसी विफल लागत हैं जिन्हें पुनः वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता है जब एक नई संरचना की आवश्यकता हो, इसके लिए फिर नए खर्च उठाने होंगें।

सबसे महत्वपूर्ण है स्वामित्व की भावना। जो लोग दूसरों के द्वारा अपने लिए शौचालय डिजाइन और निर्मित कराते हैं उनकी तुलना में उन लोगों के बीच शौचालयों का उपयोग करने, उसका रखरखाव करने और समय पर मरम्मत करने की अधिक संभावना है जो स्वयं अपने गड्ढे खोदते हैं या अपने शौचालयों का निर्माण करते हैं जैसे कि सी.एल.टी.एस की पद्धति है क्योंकि वे लोग उन शौचालयों को अपना मानते हैं। जिनको सी.एल.टी.एस की वैश्विक अनुभव के बारे में पता है उनको यह बात बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं लगेगी कि भारत में संचालित स्वच्छ भारत मिशन के प्रथम वर्ष में लोगों के लिए निर्मित शौचालयों में से आधे से कम शौचालयों का उपयोग किया जा रहा है।

अनुपयोग या आंशिक उपयोग के लिए कारणों का संयोजन

स्पष्टता के लिए हमने, कारणीय कारकों को शीर्षकों में अलग अलग किया है। वास्तव में वे एक दूसरे के साथ मिल जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, ओडीशा में संचालित अध्ययनों (बरनार्ड और अन्य 2013) में से एक में बाहर खुले में शौच करने के लिए दिए गए कारण निम्नलिखित हैं:

- वरीयता (29 फ़ीसदी)।
- शौचालय पूरा नहीं हुआ है (28 फ़ीसदी)।
- गोपनीयता की कमी (23 फ़ीसदी)।
- भण्डार घर के रूप में उपयोग किया जाना (22 फ़ीसदी)।
- असुविधा (20 फ़ीसदी)।
- टूटा हुआ (17 फ़ीसदी)।
- अवरुद्ध (9 फ़ीसदी)।
- खाली करने में कठिनाई (4 फ़ीसदी)।

ओडीशा में संचालित एक और अध्ययन (रूट्रे और अन्य 2015) में शौचालयों के निर्माण के लिए सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त लोगों के द्वारा बाहर खुले में शौच करने के लिए दिए गए कारणों में सामाजीकरण, शुद्धता और स्वास्थ्य, सहजता, अल्प काम, संरचना और डिजाइन की समस्याएं, गोपनीयता और आदत शामिल थे।

नीति और कार्य पद्धति के लिए कार्य सूची

तीन प्रकार के निहितार्थ स्पष्ट रूप से सामने आते हैं।

1. सतर्कता और सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन को प्रोत्साहित करें और उसे बढ़ावा दें

जिन देशों में सार्वभौमिक हार्डवेयर सब्सिडी उपलब्ध नहीं हैं वहाँ अच्छी तरह से कार्यान्वित सी.एल.टी.एस सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन लेकर आता है। भारत में लागू सब्सिडी (आर्थिक सहायता) कार्यक्रम किसी भी स्तर पर इसमें बाधा डालता है। जब तक यह चलता रहेगा तब तक एक अधिक संपूर्ण, सार्वभौमिक, अपक्षपाती, अत्यंत प्रभावकारी और सहभागितापूर्ण पद्धति शायद बेहतर प्रगति कर सके जिसके साथ प्रचंड, निरंतर और सम्मिलित अभियान चलाए जाने चाहिए जिनका हर धर्म में, सभी स्तरों पर प्रवक्ता हो और साथ ही चकित करने और प्रोत्साहित करने और गतिविधि एवं नवोन्मेष द्वारा अधिक जल्दी इस विषय पर जानकारी फैलाने के कार्यों को संचालित किया जाना चाहिए। वर्तमान में सी.एल.टी.एस को आरंभ करने और प्रोत्साहित करने के लिए प्रयुक्त बहुत सी पद्धतियों (अंततः 'हम एक दूसरे का मल खा रहे हैं') में यह भी जोड़ा जा सकता है कि किस प्रकार से खुले में शौच करने और फीकली-ट्रांस्मिटिड इनफेक्शंस (एफटीआइ'स) (मल से फैलने वाले संक्रमण) से वृद्धि में रुकावट आती है और अल्पपोषण की समस्या पैदा होती है। ऐसे ट्रिगर दिखाते हैं कि एफटीआइयों का समुदाय में बच्चों के संज्ञानात्मक और शारीरिक विकास, उनके स्कूल जाने की अवधि, स्कूल में उनके प्रदर्शन, बाद के जीवन में उनके आय अर्जन, और हानिग्रस्त प्रतिरक्षा तंत्र के कारण जीवन भर बीमारियों के चपेट में आने के वर्द्धित खतरे पर किस प्रकार से प्रभाव पड़ता है। क्रूरता से सीधे प्रश्न पूछने वाले नारों में 'आज आपके बच्चे की वृद्धि को कौन रोक रहा है?' और 'आज आप किसके बच्चे की वृद्धि को रोक रहे/रही हैं?' जैसे नारे शामिल हो सकते हैं।

भारत में इसी एक समान क्रूरता वाली एक और चुनौती है मल ढोने वाले लोगों के प्रति भेद भाव। फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस के अन्य अंशों में इस विषय पर आलोचना की गई है। इसका यहाँ पर संक्षिप्त रूप से विवरण करना इसलिए जरूरी है क्योंकि उनका जारी उत्पीड़न और उनके प्रति किया गया कठोर व्यवहार बहुत से समुदायों में एक सामाजिक/समाज का मानदण्ड है जिस पर तुरंत ध्यान दिया जाना चाहिए।

2. तकनीकी जानकारी प्रदान करना

संरचनाओं के लिए सुविज्ञ चयन

ग्रामीण स्वच्छता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों ने केवल स्वास्थ्य के विषय पर अपना ध्यान केंद्रित किया है और शौचालय के निर्माण और उसके रखरखाव से जुड़ी तकनीकी जानकारी के विषय पर कम ध्यान दिया गया है। भौतिक और सामाजिक परिस्थिति के अनुसार उचित टेक्नोलॉजी (प्रौद्योगिकी) भिन्न होती है। बांग्लादेश की अधिकांश एक समान परिस्थितियों में बड़े पैमाने पर सीमेंट के घेरे वाले एकल गड्ढों का उपयोग किया जाता है। उत्तरी भारत में, सरकारी नीति द्वारा प्रवर्तित जुड़वां गड्ढे और अधिक महंगे और उनके मल संचय करने की क्षमता के कारण अधिकांश लोगों द्वारा वरीय सेप्टिक टैंक दोनों के बारे में ही लोगों के बीच कम तकनीकी जानकारी है। चार अफ्रीकी देशों में अच्छी गुणवत्ता वाले और टिकाऊ शौचालयों के निर्माण और उनके रखरखाव के बारे में परामर्श या जानकारी की कमी के कारण फिर से खुले में शौच करने की दर

प्रभावित हो रही है (टिडेल-बिस्को और अन्य 2013)। महंगे विकल्पों से शायद व्यवसायियों को लाभ हो लेकिन वे संपूर्ण स्वच्छता को निरुत्साहित करते हैं क्योंकि गरीब लोगों के पास उसके लिए पैसे ही नहीं होते।

निर्माण कार्य और राजमिस्त्रियों का निरीक्षण

बुनियाद अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक बार उसे ढक दिया जाए तो उसकी जांच करना या उसे ठीक करना कठिन या असंभव हो सकता है। जहाँ राजमिस्त्री निर्माण का काम करते हैं वहाँ परिवार के लोगों और गांव की समितियों को पता होना चाहिए कि वे किस प्रकार से उसका निरीक्षण करें और किस चीज पर जोर दें। यह विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जरूरी है जहाँ भ्रष्टाचार के उच्च स्तर हैं। सी.एल.टी.एस पद्धति में, बुनियाद को विशिष्ट रूप से स्वयं परिवारों पर छोड़ दिया जाता है।

3. गड्ढे का रखरखाव और गड्ढे को खाली करने के विकल्प

बहुत से ग्रामीण इलाकों में भरे हुए शौचालयों को खाली करने के बारे में व्यापक अनभिज्ञता और स्वच्छ विकल्पों की कमी है। फेकल स्लज मैनेजमेंट (एफएसएम) सेवाएं (मलीय गंदगी को हटाने की सेवाएं) शहरी इलाकों में अधिक उपलब्ध हैं। सी.एल.टी.एस की प्रथानुसार, समुदायों को ऐसी सुविधा प्रदान की जानी चाहिए जिसके तहत वे चर्चा कर सकें कि शौचालयों का गड्ढा भर जाने पर क्या होगा। क्या नए गड्ढे खोदे जाने चाहिए या मौजूदा गड्ढों को खाली करके उसमें मौजूद मल का सुरक्षित रूप से निपटान किया जाना चाहिए? और पर्याप्त उपयोग करने में आसान (यूजर फ्रेंडली) सेवाएं प्रदान करने के लिए कौनसी सहायता की जरूरत हो सकती है?

तकनीकी उपाय

कोई भी उपाय आदर्श नहीं है। तालिका 2 में आरबोरलूस, ट्विन पिट्स (जुड़वां गड्ढे) और सेप्टिक टैंक्स के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पहलुओं को दिखाया गया है। आरबोरलूस, कम गहरे गड्ढे हैं जिनमें एक अस्थाई या मोबाइल पत्थर की पटिया और ऊपरी ढांचा होता है। गड्ढे के ठीक भरने से पहले पत्थर की पटिया और ऊपरी ढांचे को हटा दिया जाता है और गड्ढे में मिट्टी भर कर पेड़ लगाया जाता है (टिली और अन्य 2014)। वैकल्पिक तौर पर ट्विन पिट्स पद्धति और सेप्टिक टैंक दोनों में ही स्थाई ऊपरी ढांचा है और उन दोनों को ही खाली करने की जरूरत होती है। ऐसे उपायों को ढूँढने की जरूरत है जिनसे परिवार निपट सकें और जिन्हें अपनाने के लिए वे राजी हों।

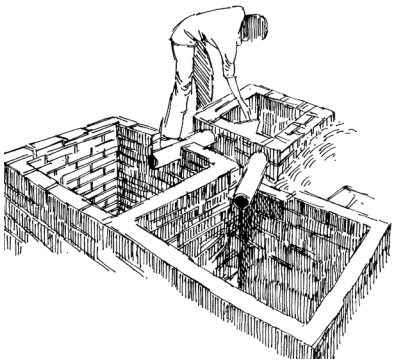

निर्माणाधीन ट्विन पिट्स जिसमें पाइप दिखाई दे रहे हैं।
श्रेय: रॉड शॉ, डब्लूईडीसी

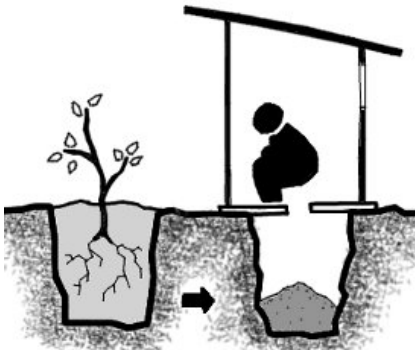

आरबोरलू। श्रेय: *एसएसडब्लूएम टूलकिट (ईएडब्लूएजी और अन्य 2015)।*

तालिका 2: ट्विन पिट्स, सेप्टिक टैंक और आरबोरलूस की तुलना

	पक्ष	**विपक्ष**
ट्विन पिट्स	• बारी बारी से उपयोग करने से उनके उपयोग का जीवनकाल प्रायः असीमित है। • गड्ढे का खाद प्रायः बदबू रहित है।[2] • मल युक्त कीचड़ को हटाने की तुलना में खाद को हटाना अधिक सहज है। • पैथोजेंस (रोगाणु) की मात्रा में महत्वपूर्ण कमी। • गड्ढों का दोबारा उपयोग किया जा सकता है। • खाद एक बहुमूल्य फर्टिलाइजर (उर्वरक) है। • स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके निर्माण और मरम्मत का काम किया जा सकता है। • अल्प लागत।	• गड्ढों को स्वयं साफ करने की आवश्यकता है। • प्रायः दूसरे गड्ढे का कभी निर्माण ही नहीं किया जाता है और किसी को आ कर खाली करने के लिए पैसे देने से पहले परिवार तब तक प्रतीक्षा करते हैं जब तक दोनों गड्ढे भर ना जाएं (स्टीव सजन की टिप्पणी अनुसार)। • कुछ क्षेत्रों में गड्ढे से प्राप्त खाद के उपयोग की सामाजिक स्वीकृति कम हो सकती है।
सेप्टिक टैंक	• सरल और मजबूत। • संचालन लागत कम हैं। • उपयोग का जीवन काल लंबा है। • भूमि के ऊपर अल्प भूमि के क्षेत्र की आवश्यकता (हालांकि भूमि के नीच बड़ी जगह की आवश्यकता है)	• पैथोजेंस (रोगाणु), ठोस पदार्थों और कार्बनिक पदार्थों की मात्रा में अल्प कमी। • नियमित रूप से मल युक्त कीचड़ की सफाई को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। • प्रवाह और मल युक्त कीचड़ के निपटान के लिए अधिक कार्यों की आवश्यकता। • अगर सही तरह से निर्मित ना किया जाए तो भूजल को दूषित कर सकता है।
आरबोरलू	• सभी उपयोगकर्ताओं के लिए कार्यांवित करना सहज। • अल्प लागत। • पैथोजेंस (रोगाणु) के फैलने का अल्प जोखिम। • पेड़ लगाने से और फलों की पैदावार से आय जनित की जा सकती है।	• नए गड्ढे को खोदना अनिवार्य है। • भूजल के दूषण के जोखिम को दूर नहीं करता है। • इसमें प्रायः अधिक मात्रा में श्रम की आवश्यकता होती है। • बहुत बड़ी जगहों की आवश्यकता। • उन क्षेत्रों के लिए अनुचित जहाँ भूजल का स्तर ऊँचा हो। • ऊपरी ढाँचे और पत्थर की पटिया को हटाने या पुनः निर्मित करने की आवश्यकता।

स्त्रोत: टिली और अन्य 2014 और अन्य लेखकों की सोच और उनके अनुभव से ज्ञात जानकारी पर आधारित।

2 गड्ढे की खाद से तात्पर्य मनुष्य के मल से पैदा खाद से है। यह आम खाद की भांति ही दिख सकती है और मिट्टी को अधिक उर्वर बनाने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है (टिली और अन्य 2014)।

खाली करने के विकल्प

शौचालयों के गड्ढों से मल युक्त कीचड़ को खाली करने, ले जाने और उसके निपटान से संगठनात्मक कठिनाइयों के साथ साथ महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी जोखिम भी उत्पन्न हो सकते हैं (वॉटर रिसर्च कमीशन 2007)। मौजूदा गड्ढों को ढक देना और एक नए गड्ढे को खोदना एक सुरक्षित और स्वच्छ एफ.एस.एम विकल्प हो सकता है। हालांकि हमेशा यह संभव नहीं होता जहाँ अल्प जगह हो या मिट्टी के प्रकार या तलरूप के कारण एक नया गड्ढा खोदना महंगा और कठिन हो।

लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एण्ड ट्रॉपिकल मेडिसिन द्वारा बनाया गया गल्पर, एक हस्त चालित पम्प है जिसे पाइप के द्वारा गड्ढों के साथ जोड़ा जा सकता है। उपयोगकर्ता एक हैंडल को ऊपर नीचे उठाते हैं जो गड्ढे से मल युक्त कीचड़ को बाहर निकाल देता है। इसका उपयोग शहरी इलाकों में किया गया है और सुदूर क्षेत्रों में भी इसे परखा गया है (क्रैनफील्ड विश्वविद्यालय और अन्य 2011)। सभी मल एकत्र करने की हस्त चालित पद्धतियों की तुलना में गल्पर ने सर्वाधिक गड्ढे खाली किए हैं। हालांकि बाहरी संगठनों द्वारा किए गए हस्तक्षेपों के बिना किसी भी अन्य उपयोग के मामले सामने नहीं आए हैं (मिखाइल और अन्य 2015)। इस बात की और भी कम संभावना है कि आर्थिक तंगी से ग्रस्त ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाले लोग गल्पर जैसी चीज के लिए पैसों का भुगतान करेंगे।[3]

सामाजिक विचार

जो लोग गड्ढे खाली करने के माध्यम से आय अर्जित करना चाहते हैं उनके लिए सामाजिक लागतें भारी हो सकती हैं (सजन 2013)। भारत में मल ढोने के काम को स्थाई रूप से गंदा और दूसरों को गंदा करने वाला माना जाता है और इस काम को करने वाले लोगों पर किए गए निरंतर उत्पीड़न और उनके सामाजिक बहिष्कार के लिए इसी तर्क को सामने प्रस्तुत किया जाता है (गुप्ता और अन्य, आगामी; कॉफी और अन्य 2015)। ह्यूमन राइट्स वॉच द्वारा हाल ही में प्रस्तुत की गई रिपोर्ट से यह पता चला है कि आज भी सफाई कर्मियों को सामुदायिक पानी के स्रोत और मंदिरों तक पहुँच प्रदान नहीं की जाती है और उन्हें सामुदायिक धार्मिक और सांस्कृतिक घटनाओं में भाग लेने से रोका जाता है (2014)। गड्ढों के रखरखाव की सेवाओं पर आलोचना करने के समय यह अनिवार्य है कि जो लोग मल ढोते हैं उनके साथ बुरा व्यवहार न किया जाए।

3 खाली करने के विभिन्न मानव चालित और मोटर चालित उपायों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए यह देखें: The Compendium of Sanitation System and Technologies: www.susana.org/_resources/documents/default/3-454-7-1413804806. pdf
और मलीय कीचड़ को एकत्र करने और लेकर जाने के उपायों और माध्यमों के लिए: www.eawag.ch/fileadmin/Domain1/Abteilungen/sandec/publikationen/EWM/Book/FSM_Ch04_Collection_and_Transport.pdf

टाइगर वर्म्स: ए विन विन सल्यूशन?

'टाइगर टॉयलेट' एक ऑनसाइट स्वच्छता की प्रणाली है जो ताजे मानव मल को प्रोसेस करने के लिए खाद पैदा करने वाले कीड़ों का उपयोग करता है, जबकि बाकी का प्रवाह नीचे मिट्टी में मिल जाता है। एक अल्प वॉल्यूम पोर फ्लश पैन के द्वारा यह प्रणाली ऊपरी ढाँचे से जुड़ी होती है। यह सुगठित (10 लोगों के लिए 1 क्यूबिक मीटर) और अनुकूलनीय है और स्थानीय रूप से उपलब्ध चीजों का उपयोग करके लोग स्वयं अपने लिए भूमि के ऊपर या नीचे इसका निर्माण कर सकते हैं। गड्ढे का तल नीचे मिट्टी में खुला होता है और यह स्थानीय रूप से उपलब्ध जलनिकासी और बेडिंग सामग्रियों से ढका होता है। 1 किलो मानव मल को 100 से 200 ग्राम वर्म वेस्ट (वर्मीकम्पोस्ट) में परिवर्तित किया जाता है जिससे गड्ढे में परिमाण कम हो जाता है और उसे भरने में अधिक लंबा समय लगता है। वर्मीकम्पोस्ट को इस सिस्टम के बिल्कुल ऊपरी सतह पर जनित किया जाता है और यह एक सूखी, दुर्गंध रहित खाद है जिसे खाली करना आसान और सुरक्षित है (तस्वीर देखें)। इस सिस्टम में आने वाले परिमाण को कीड़ों के द्वारा दैनिक रूप से प्रोसेस किया जाता है इसलिए ताजा मल एकत्र नहीं होता है और कोई दुर्गंध भी नहीं आती है। कम्पोस्ट बनाने से गड्ढे में परिमाण कम हो जाता है और इससे भरने में भी अधिक लंबा समय लगता है एवं अनुमानित किया जाता है कि एक गड्ढे को भरने में पाँच वर्ष लगेंगे।

युगांडा, म्यांमार और भारत के उपयोगकर्ताओं से मिली प्रतिपुष्टि (फीडबैक) बहुत ही सकारात्मक है जहाँ सभी परिवारों को इस सिस्टम का उपयोग जारी रखने में कोई आपत्ति नहीं है। बेयर वैली वेंचर्स लिमिटेड और प्रिमूव इनफ्रास्ट्रक्चर डिवेलपमेंट कनसल्टेंट्स प्राइवेट लिमिटेड के बीच हुई सहकार्यता से महाराष्ट्र में इस तकनीक को तेजी से फैलाया जा रहा है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: waltergibson@bearvalleyventures.com

टाइगर टॉयलेट को स्थापित किया जा रहा है, भारत। *श्रेय: क्लेयर फरलॉन्ग।*

नवोन्मेष, शिक्षा और अनुसंधान के लिए कार्यसूची

खोज और जांच के लिए एक काफी नया क्षेत्र होने के कारण, बहुत कुछ सीखना बाकी है और हम यह अपेक्षा करते हैं कि जैसे जैसे नई चीजें सामने आती जाएंगीं वैसे वैसे फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस के इस प्रकाशन में उल्लिखित काफी कुछ तथ्य को बदलने की आवश्यकता होगी। परिस्थिति के अनुसार शिक्षा और अनुसंधान की प्राथमिकताएं भिन्न होंगीं क्योंकि भारत की तुलना में एशिया के बाकी हिस्से और अधिकांश अफ्रीका में परिस्थितियाँ भिन्न होगी। नवोन्मेष, कार्य संबंधी शिक्षा और अनुसंधान के लिए जिन मुख्य विषयों का सुझाव दिया गया है वे निम्नलिखित हैं:

निम्नलिखित को करने के प्रभावशाली तरीके:

- किसी कार्यक्रम से पहले प्रारंभिक अनुसंधान संचालित करना ताकि प्रासंगिक सामाजिक मानदंडों को समझा जा सके, और सुनिश्चित किया जा सके कि अनुसंधान से प्राप्त जानकारी के कारण सी.एल.टी.एस पर भरोसा कम ना हो।
- मानदंड एवं उपयोग के विषय पर स्वाभाविक नेताओं और दूसरों से परामर्श करना, उनके साथ मिल कर काम करना और उन्हें अपना समर्थन देना।
- समुदायों को सहूलियत प्रदान करना ताकि वे उन लोगों (पुरुष, महिला, वृद्ध, अक्षम, बच्चे आदि), और समय और अवस्थाओं (रात, बारिश, प्रातः काल जब बहुत सारे लोगों को शौचालय का उपयोग करने की आवश्यकता होती है) को पहचानें जो खुले में शौच की संभावना को बढ़ाते हैं/जिनके कारण खुले में शौच किया जाता है और फिर उस पर उचित कार्रवाई करें।
- खुले में शौच से मुक्त होने के पश्चात पुनःपुष्टि करें और आंशिक उपयोग पर विशेष ध्यान दें और संपूर्ण उपयोग की अवस्था स्थापित करने के लिए उचित कार्रवाई करें।
- क्षेत्रीय और राष्ट्रीय परिवर्तन और उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों और समस्याओं के वितरण और गहनता को दर्ज करना।
- सामाजिक मानदंड, प्रतिबंध, शौचालय की सफाई और गड्ढे को खाली करना, और इसे करना चाहिए या नहीं और कब करना चाहिए जैसे मुद्दों पर सामुदायिक कार्रवाई आरंभ करना और उसे प्रोत्साहित करना।
- व्यवसायियों को खोजना, प्रशिक्षित करना, उचित साधन प्रदान करना (अगर आवश्यक हो) और उन्हें प्रोत्साहित करना कि वे गड्ढों को खाली करने की सेवा प्रदान करें।
- शौचालय के उपयोग के बारे में भरोसेमंद आंकड़े जनित करना और परिवार के भीतर विभिन्नताओं पर ध्यान देना।

निम्नलिखित के बारे में अधिक जानने के लिए अनुसंधान:

- कौन शौचालय को साफ करता है, कौनसे कारक स्वच्छता को प्रभावित करते हैं और उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- किस प्रकार से शौचालय की साफ-सफाई और गड्ढे को खाली करने के कार्य को सुनिश्चित किया जा सकता है और सेवा प्रदाताओं को कौनसी सहायता की आवश्यकता है।
- ग्रामीण भारत के लोगों को किस प्रकार से भरोसा दिलाया जाए कि अच्छी तरह से कम्पोस्ट किया हुआ मल अहानिकारक है, उससे गंदगी नहीं होती और वह मूल्यवान है।

- जाति आधारित बहिष्कार और स्वच्छता संबंधी कर्यों और एफ.एस.एम से जुड़े अत्याचार को किस प्रकार से तोड़ा जा सकता है।
- भारत और अन्य देशों में आंशिक उपयोग कितने बड़े पैमाने पर फैला हुआ है। जहाँ खुले में शौच से मुक्त जनसंख्या के एवज में निर्मित शौचालयों की गणना की जाए वहाँ खुले में शौच से मुक्त आंकड़े कितने गुमराह करते हैं।
- गड्ढों के भरने के प्रति आचरण और पूरे परिवार या कुछ सदस्यों का पुनः खुले में शौच आरंभ करना, जिसमें लिंग संबंधी पहलू भी शामिल हैं।
- किस हद तक यह मुख्यतः एक भारतीय समस्या है।

निष्कर्ष:

सामाजिक मानदंड एवं शौचालय के उपयोग के विषय के बारे में अधिक पता लगाने और सीखने की दिशा में लिया गया यह पहला कदम है। फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस के इस प्रकाशन में हमने संक्षिप्त रूप से और श्रेणीबद्ध रूप से यह प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है कि अब तक हम इस विषय पर क्या सीख पाए हैं और साथ ही हमने कुछ कार्रवाइयों का सुझाव भी दिया है। यहाँ उल्लिखित कोई भी चीज पत्थर पर खींची हुई लकीर नहीं है। हम CLTS@ids.ac.uk के प्रति टिप्पणियों, समालोचनाओं, अनुसंधानों और अधिक गहरी पहुँच को आमंत्रित करते हैं ताकि हम एक साथ मिल कर सीख सकें कि इन अत्यंत ही महत्वपूर्ण समस्याओं का किस प्रकार से अधिक प्रभावशाली रूप से सामना किया जा सकता है।

संदर्भ

Abramovsky, L., Augsburg, B. and Oteiza, F. (2015) *Sustainable Total Sanitation – Nigeria Baseline Report*, http://www.ifs.org.uk/uploads/publications/mimeos/Abramovsky_et_al_Baseline%20report%20Nigeria%20STS.pdf

Alzua, M.L, Pickering, A., Djebbari, H., Lopez, C. Cardenas, J.C., Lopera, M., Osbert, N., Coulibaly, M. (2015) *Final Report: Impact Evaluation of community-led total sanitation (CLTS) in rural Mali*, http://www.unicef.org/evaldatabase/files/CLTS_impact_eval_Mali_final_report.pdf

Ashebir, Y., Sharma, H.R., Alemu, A. and Kebede, G. (2013) 'Latrine Use among Rural Households in Northern Ethiopia: A Case Study in Hawzien District, Tigray', *International Journal of Environmental Studies*, 70.4: 629-636

Barnard, S., Routray, P., Majorin, F., Peletz, R., Boisson, S., Sinha, A. and Classen, T. (2013) 'Impact of Indian Total Sanitation Campaign on Latrine Coverage and Use: A Cross-Sectional Study in Orissa Three Years following Programme Implementation', *PLoS ONE*, 8.8

Cavill, S. with Chambers, R. and Vernon, N. (2015) 'Sustainability and CLTS: Taking Stock', *Frontiers of CLTS: Innovations and Insights* Issue 4, Brighton: IDS

Cavill, S., Roose, S., Stephen, C. and Wilbur J. (2016) 'Putting the hardest to reach at the heart of the SDGs' in P. Bongartz, N. Vernon and J. Fox (eds) *Sustainability for All: Experiences, Challenges and Innovations*, Rugby: Practical Action

Clasen, T., Boisson, S., Routray, P., Torondel, B., Bell, M., Cumming, O., Ensink, J., Freeman, M., Jenkins, M., Odajiri, M., Ray, S., Sinha, A., Suar, M. and Schmidt, W-P. (2014) 'Effectiveness of a Rural Sanitation Programme on Diarrhoea, Social-Transmitted Helminth Infection, and Child Malnutrition in Odisha, India: A Cluster-Randomised Trial', *The Lancet Global Health*, 2.11: 645-653

Coffey, D., Gupta, A., Hathi, P., Khurana, N., Spears, D., Srivastav, N. and Vyas, S. (2014) *Revealed Preference for Open Defecation: Evidence from a New Survey in Rural North India*, SQUAT Working Paper 1, Rice Institute, http://riceinstitute.org/wordpress/wp-content/uploads/downloads/2014/09/SQUAT-paper-for-mailing-and-website_062414.pdf

Coffey, D., Gupta, A., Payal, H., Spears, D., Srivastav, N. and Vyas, S. (2015) *Culture and Health Transition: Understanding Sanitation Behaviour in Rural North India*, International Growth Centre Working Paper, http://www.theigc.org/wp-content/uploads/2015/04/Coffey-et-al-2015-Working-Paper.pdf

Coffey, D. and Spears, D. (2014) H*ow Can a Large Sample Survey Monitor Open Defecation in Rural India for the Swatch Bharat Abhiyan*, Working Draft, http://www.susana.org/_resources/documents/default/3-2176-7-1424791330.pdf

Cranfield University, SKAT, WaterAid and IRC (2011) *Africa Wide Water, Sanitation and Hygiene Technology Review*, https://washtechafrica.files.wordpress.com/2011/04/washtech_wp2-1_africa_wide_water_sanitation_hygiene_technology_review.pdf

Dogra, A. (2015), 'Debate: The Sanitation and Ghoonghat Campaign Actually Empowers Women', *The Wire*, 16 June, http://thewire.in/2015/07/16/how-the-sanitation-and-ghoonghat-campaign-empowers-women-6490/

Doron, A., and Raja, I. (2015) 'The Cultural Politics of Shit: Class, Gender and Public Space in India', *Postcolonial Studies* 19.2: 1-19

Dreibelbis, R., Jenkins, M., Chase, R.P., Torondel, B., Routray, P., Boisson, S. Clasen, T. and Freeman, M. (2015) 'Development of A Multi-Dimensional Scale to Assess Attitudinal Determinants of Sanitation Uptake and Use', *Environmental Science and Technology*, 49.22: 13613-21

Gupta, A., Coffey D. and Spears D. (forthcoming, 2016) 'Purity, pollution, and untouchability: challenges affecting the adoption, use and sustainability of sanitation programmes in rural India' in P. Bongartz, N. Vernon and J. Fox (eds) *Sustainability for All: Experiences, Challenges and Innovations*, Rugby: Practical Action

Hanchett, S., Krieger, L., Kahn, M.H., Kullmannn, C. and Ahmed, R. (2011) Long-Term Sustainability of Improved Sanitation in Rural Bangladesh, Washington, DC: World Bank, https://openknowledge.worldbank.org/handle/10986/17347

House, S. and Cavill, S. (2015) 'Making Sanitation and Hygiene Safer: Reducing Vulnerabilities to Violence', *Frontiers of CLTS: Innovations and Insights* Issue 5, Brighton: IDS

Human Rights Watch (2014) Cleaning Human Waste: "Manual Scavenging", Caste and Discrimination in India, https://www.hrw.org/sites/default/files/reports/india0814_ForUpload_0.pdf

Jenkins, M.W., Freeman, M.C. and Routray, P. (2014) 'Measuring the Safety

of Excreta Disposal Behavior in India with the New Safe San Index: Reliability, Validity and Utility', *International Journal of Environmental Research and Public Health*, 11.8: 8319-46

Kema, K., Semali, I., Mkuwa, S., Kagonji, I., Temu, F., Ilako, F. and Mkuye M. (2012) 'Factors Affecting the Utilisation of Improved Ventilated Latrines Among Communities in Mtwara Rural District, Tanzania', *Pan African Medical Journal*, 13.4: 1-5

Mikhael, G., Robbins, D.M., Ramsay, J.E. and Mbéguéré, M. (2015) *Methods and Means for Collection and Transport of Faecal Sludge*, http://www.eawag.ch/fileadmin/Domain1/Abteilungen/sandec/publikationen/EWM/Book/FSM_Ch04_Collection_and_Transport.pdf,

Patil, S., Arnold, B., Salvatore, A., Briceno, B., Ganguly, S., Colford, J., Gertler, P. (2014) 'The Effect of India's Total Sanitation Campaign on Defecation Behaviours and Child Health in Rural Madhya Pradesh: A Cluster Randomised Controlled Trial', *PLoS Medicine*, 11.8

Ministry of Rural Development (2010) *National Sanitation and Hygiene Knowledge, Attitudes, and Practices Survey Final Report*, http://camnut.weebly.com/uploads/2/0/3/8/20389289/2010_national_sanitation_and_hygiene_knowledge_attitudes_and_practices_kap_survey_eng_2010.pdf

Myers, J. (forthcoming, 2016) 'The Long-Term Safe Management of Rural Shit', in P. Bongartz, N. Vernon and J. Fox (eds) *Sustainability for All: Experiences, Challenges and Innovations*, Rugby: Practical Action

Opel, A. and Cheuasongkham, P. (2015) *Faecal Sludge Management Services in Rural Laos: Critical Gaps and Important Ways Forward*, presentation 19 March 2015 International Faecal Sludge Management Conference

O'Connell, K. (2014) *What Influences Open Defecation and Latrine Ownership in Rural Households?: Findings from a Global Review*, Water and Sanitation Program Working Paper, Washington DC: World Bank, www.wsp.org/sites/wsp.org/files/publications/WSP-What-Influences-Open-Defecation-Global-Sanitation-Review.pdf

Rheinländer, T., Keraita, B., Konradson, F., Samuelsen, H. and Dalsgaard, A. (2013) 'Smell: An Overlooked Factor in Sanitation Promotion', *Waterlines*, 32.2: 106-112

Roose, S., Rankin, T. and Cavill, S. (2015) 'Breaking the Next Taboo: Menstrual Hygiene within CLTS', *Frontiers of CLTS: Innovations and Insights* Issue 6, Brighton: IDS

Routray, P., Wolf-Peter, S., Boisson, S., Clasen, T. and Jenkins, M., (2015) 'Socio-Cultural and Behavioural Factors Constraining Latrine Adoption in Rural Coastal Odisha: An Exploratory Qualitative Study', *BioMed Central Public Health* 15, doi: 10.1186/s12889-015-2206-3

Shah, A., Thathachari, J., Agarwai, R. and Karamchandani, A. (2013) *White Paper: A Market Led, Evidence Based Approach to Rural Sanitation*, http://www.gramalaya.in/pdf/Market_Led_Approach_to_Rural_Sanitation.pdf

Sharma, N. (2015) 'Swachh Bharat Abhiyan: Survey Reveals Not Even Half the Toilets Built Being Used: Government withheld Findings', *The Economic Times* of India, 23 November, http://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/swachh-bharat-abhiyan-survey-reveals-not-even-half-the-toilets-built-being-used-government-withheld-findings/articleshow/49885579.cms

Srivastav, N. and Gupta, A. (2015) 'Why Using Patriarchal Messaging to Promote Toilets is a Bad Idea', *The Wire*, 7 June, http://thewire.in/2015/06/07/why-using-patriarchal-messaging-to-promote-toilets-is-a-bad-idea-3402/

SNV Zambia (2014) *Zambia Country Baseline Report: Sustainable Sanitation and Hygiene for All Results Programme*, unpublished

Tilley, E., Ulrich, L., Lüthi, C., Reymond, Ph. and Zurbrügg, C. (2014) *Compendium of Sanitation Systems and Technologies*, 2nd Revised Edition, Dübendorf, Switzerland: Swiss Federal Institute of Aquatic Science and Technology

Thys, S., Mwape, K.E., Lefèvre, P., Dorny, P., Marcotty, T., Phiri, A.M., Phiri, I. and Gabriel, S. (2015) 'Why Latrines Are Not Used: Communities' Perceptions and Practices Regarding Latrines in a Taenia solium Endemic Rural Area in Eastern Zambia', *PLOS Neglected Tropical Diseases*, 9.3

Tyndale-Biscoe, P., Bond, M. and Kidd, R. (2013) ODF Sustainability Study, FH Designs and Plan International, www.communityledtotalsanitation.org/resource/odf-sustainability-study-plan

UNICEF Myanmar (2011) *Knowledge, Attitude and Practice Study into Water, Sanitation and Hygiene in 24 Townships in Myanmar*, http://www.burmalibrary.org/docs17/WASH-Myanmar_%202011_KAP_Study-red.pdf

WaterAid (2009) *Towards Total Sanitation: Socio-Cultural Barriers and Triggers to Total Sanitation in West Africa*, Water, Sanitation and Hygiene Institute, WaterAid, www.communityledtotalsanitation.org/resource/towards-total-sanitation-socio-cultural-barriers-and-triggers-total-sanitation-west-africa

Water, Sanitation and Hygiene Institute (2015) *Fecal Sludge Management: A Landscape Study of Practices, Challenges, and Opportunities*, http://www.washinstitute.org/pdf/FSM-STUDY-REPORT-April-2015.pdf

Water Research Commission (2007) *Design and Operation Requirement to Optimize the Life Span of VIP Toilets - Outcome of WRC Project 1630*, WRC, South Africa, http://www.susana.org/_resources/documents/default/2-253-wrc-2007-optimize-life-span-vip-en.pdf

Wilbur, J. and Jones, H. (2014) 'Disability: Making CLTS Fully Inclusive', *Frontiers of CLTS: Innovations and Insights* Issue 3, Brighton: IDS

WSP (2015) *Management of Child Faeces: Current Disposal Practices, Water and Sanitation Program Research Brief*, Washington DC: World Bank, http://www.wsp.org/sites/wsp.org/files/publications/WSP-CFD-Summary-Brief.pdf

Wood, J. (2011) 'The Quest for Sustainable Sanitation in Cambodia', in *What Happens When the Pit is Full?*, Seminar Report

World Bank (2009) *Tanzania - Market Research Assessment in Rural Tanzania for New Approaches to Stimulate and Scale Up Sanitation Demand and Supply*, Water and Sanitation Program, Washington DC: World Bank, http://documents.worldbank.org/curated/en/2009/02/16708158/tanzania-market-research-assessment-rural-tanzania-new-approaches-stimulate-scale-up-sanitation-demand-supply

Yimam, Y.T., Gelaye, K.A. and Chercos, D.H. (2014) 'Latrine Utilization and Associated Factors Among People Living in Rural Areas of Denbia District, Northwest Ethiopia, 2013, A Cross-Sectional Study', *Pan African Medical Journal*, 18.334. doi: 10.11604/pamj.2014.18.334.4206

इस श्रृंखला के बारे में

यह छोटी टिप्पणियों की एक श्रृंखला है जो विस्तृत समस्याओं के बारे में नई पद्धतियों और दृष्टिकोण और सोच पर एक वास्तविक मार्गदर्शिका प्रदान करती है। हम टिप्पणियों, विचारों और सुझावों को आमंत्रित करते हैं, कृपया clts@ids.ac.uk पर हमसे संपर्क करें।

सी.एल.टी.एस के बारे में अन्य मुख्य साधन

यह और बहुत से अन्य साधन निम्नलिखित पर उपलब्ध हैं www.communityledtotalsanitation.org/resources

Bongartz, P., Musembi Musyoki, S., Milligan, A. and Ashley, H. (2010) Tales of Shit: Community-Led Total Sanitation in Africa, Participatory Learning and Action 61, London: International Institute for Environment and Development

Kar, K. (2010) Facilitating 'Hands-on' Training Workshops for CLTS: A Trainer's Training Guide, Geneva: WSSCC

Kar, K. with Chambers, R. (2008) Handbook on Community-Led Total Sanitation, Brighton and London: IDS and Plan International

इस श्रृंखला में उपलब्ध अन्य शीर्षक

सारे प्रकाशन www.communityledtotalsanitation.org/resources/frontiers पर उपलब्ध हैं

प्रकाशन 1: Cole, B. (2013) 'Participatory Design Development for Sanitation'

प्रकाशन 2: Maulit, J.A. (2014) 'How to Trigger for Handwashing with Soap'

प्रकाशन 3: Wilbur, J and Jones, H. (2014) 'Disability: Making CLTS Fully Inclusive'

प्रकाशन 4: Cavill, S. with Chambers, R. and Vernon, N. (2015) 'Sustainability and CLTS: Taking Stock'

प्रकाशन 5: House, S. and Cavill, S. (2015) 'Making Sanitation and Hygiene Safer: Reducing Vulnerabilities to Violence'

प्रकाशन 6: Roose, S., Rankin, T. and Cavill, S. (2015) 'Breaking the Next Taboo: Menstrual Hygiene within CLTS'

नॉर्म्स, नॉलेज एण्ड यूसेज (मानदंड, जानकारी और उपयोग)

शौचालयों का आंशिक या संपूर्ण अनुपयोग जहाँ परिवार के कुछ या सभी सदस्य खुले में शौच कर रहे हों एक बढ़ती हुई चिंता का विषय है। हालांकि सभी परिवारों के पास शायद शौचालय हों लेकिन समुदाय संपूर्ण रूप से तब तक खुले में शौच से मुक्त नहीं हो सकते हैं जब तक सभी शौचालयों का उपयोग करना आरंभ ना करें। यह केवल रखरखाव या पहुँच का मुद्दा नहीं है बल्कि यह सामाजिक मानदंड, मानसिकताओं और सांस्कृतिक वरीयताओं का मुद्दा भी है। यह समस्या बड़े पैमाने पर फैली हुई है लेकिन इसे भारत में सबसे सुस्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। फ्रंटीयर्स ऑफ सी.एल.टी.एस के इस प्रकाशन में यह पूछा गया है कि यह समस्या कितनी गंभीर है, यह क्यों उत्पन्न होती है और इसके बारे में क्या किया जा सकता है और किन किन चीजों को जानने की जरूरत है। इसमें वर्तमान जानकारी को संक्षेप में पेश करने का प्रयास किया गया है जो दुनिया के कुछ हिस्सों में खुले में शौच से मुक्त स्थिति को प्राप्त करने और निरंतर उसे बनाए रखने के उद्देश्य के सामने आने वाली बढ़ती हुई बाधाओं को जानने और सीखने के लिए उठाया गया पहला कदम है।

लेखकों के बारे में

रॉबर्ट चेम्बर्स, इंस्टिट्यूट ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीस, ससेक्स विश्वविद्यालय में एक अनुसंधान सहयोगी हैं और वे सी.एल.टी.एस नॉलेज हब में कार्यरत हैं।

जेमी मायर्स, सी.एल.टी.एस नॉलेज हब के अनुसंधान अधिकारी हैं जो इंस्टिट्यूट ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीस, ससेक्स विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं। उनका काम अफ्रीका और एशिया में सी.एल.टी.एस और सी.एल.टी.एस – संबंधी कार्यों पर केंद्रित हैं।

CLTS Knowledge Hub

ससेक्स विश्वविद्यालय में
इंस्टिट्यूट ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीस, ब्राइटन BN1 9RE
वेब www.communityledtotalsanitation.org ईमेल CLTS@ids.ac.uk
ट्विटर @C_L_T_S
टेलीफोन +44 (0)1273 606261
फैक्स +44 (0)1273 621202

आइडीएस, गारंटी द्वारा सीमित एक धर्मार्थ कंपनी है:
पंजीकृत चैरिटी नं. 306371; इंग्लैंड में पंजीकृत 877338; वीएटी नं. **GB 350 899914**

अधिक जानें

सी.एल.टी.एस के न्यूज़लेटर (संवाद पत्र) की सदस्यता लें, अपने अनुभव साझा करें और CLTS@ids.ac.uk पर ईमेल करके सी.एल.टी.एस की वेबसाइट के प्रति अपना योगदान दें।